17 सितम्बर 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 3 सितम्बर से 12 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर विश्वास नगर में श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा रात्रि में 'यही है ध्यान यही है योग' विषय पर एवं पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री द्वारा दोनों समय समयसार (निर्जरा अधिकार) एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित विवेकजी शास्त्री एवं पण्डित मयंकजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये।

श्वेताम्बर पर्यूषण में...

श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर मुम्बई चौपाटी सर्किल पर स्थित भारतीय विद्या भवन के विशाल वातानुकूलित हॉल में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त एक-एक व्याख्यान कमला हॉल बालकेश्वर एवं मुरार बाग सीपी टेंक में भी हुये। ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल पिछले 34 वर्षों से श्वेताम्बर पर्यूषण में प्रवचनार्थ जा रहे हैं।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर किला अन्दर स्थित बड़ा जैन मन्दिर में **ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना** द्वारा प्रात: दशलक्षण धर्म पर एवं रात्रि में निश्चय-व्यवहार नय विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा महिलाओं की कक्षा एवं स्टेशन जैन मन्दिर में पण्डित चर्चितजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई का भी समागम प्राप्त हुआ तथा युवा फैडरेशन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुये। **- मलूकचंद जैन**

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त **डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर** द्वारा वन्दित्तु सव्वसिद्धे के आधार से देवदर्शन व पूजन-स्वरूप एवं रात्रि में 'पंच परमेष्ठी का स्वरूप' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त विदुषी प्रतीति पाटील जयपुर द्वारा दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये; **पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन** द्वारा नियमसार पर प्रवचन तथा ब्र. समता झांझरी उज्जैन व विदुषी पूजा शास्त्री लूणदा द्वारा भी एक-एक प्रवचन हुआ।

प्रात: दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन पण्डित आयुषजी शास्त्री पिपरिया व राजकुमारजी बरगी द्वारा संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त सम्मेदशिखर विधान एवं रत्नत्रय विधान भी संपन्न हुये। सायंकाल सामायिक व जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री सुमतिलालजी लूणदिया व विदुषी प्रतीति पाटील द्वारा कराये गये। इस अवसर पर आयोजित इन्द्रसभा भी विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। संपूर्ण कार्यक्रम में पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन का विशेष सहयोग रहा। **- चन्द्रप्रकाश जेतावत (प्रबंधक)**

अहमदाबाद-वस्त्रापुर (गुज.) : यहाँ दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामंडल विधान एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा 'आत्मा की 47 शक्तियों' पर एवं सायंकाल समाज के विशेष आग्रह पर प्रोजेक्टर द्वारा डेढ घंटा 'तीन लोक' विषय पर मार्मिक चर्चा हुई। रात्रि में श्री चिरेनभाई एवं श्री सुहासभाई के निर्देशन में पाठशाला के बालकों द्वारा विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

पर्व के अवसर पर एक दिन 54वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अहमदाबाद (चैतन्यधाम) में लगाने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर श्री अमृतभाई मेहता, श्री राजेशभाई जवेरी, श्री रमेशभाई शाह, श्री सेवन्तीभाई गांधी, श्री सुरेशभाई, श्री प्रकाशचंदजी सेमारी, श्री राजूभाई, श्री सतीशभाई, श्री निखिलभाई, श्री चिरेनभाई आदि सभी ट्रस्टी मण्डल एवं डॉ. संजीवजी गोधा, ऋषभजी शास्त्री, ध्रुवेशजी शास्त्री, स्वानुभवजी शास्त्री, रत्नेशजी शास्त्री, चैतन्यजी शास्त्री एवं करणजी शास्त्री की उपस्थिति में पूरे समाज को विशेष आमंत्रण दिया गया।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय –

जैन साधु दिगम्बर क्यों होते हैं?

1

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

वैसे सवस्त्र व निर्वस्त्र दोनों ही पहलुओं के पक्ष-विपक्ष में अनेक तर्क दिए जा सकते हैं, उनके लाभ-अलाभ गिनाये जा सकते हैं। पर वे सब कुतर्क होंगे; क्योंकि वस्तु के स्वरूप में कोई तर्क नहीं चलता। वस्तु का स्वरूप तो तर्क-वितर्क से परे हैं। अग्नि गर्म व पानी ठंडी क्यों है? नारी के मूँछें व मोरनी के पंख क्यों नहीं होते? इसके पीछे तर्क खोजने की जरूरत नहीं है।

लौकिक दृष्टि से भी साधुओं को सामाजिक सीमाओं में नहीं घेरा जाता, क्योंकि वे लोक व्यवहार से ऊपर उठ चुके हैं, व्यवहारातीत हो गये हैं। वे तो वनवासी सिंह की भाँति पूर्ण स्वतंत्र, स्वावलम्बी और अत्यन्त निर्भय होते हैं। इसी कारण वे मुख्यतया वनवासी होते हैं।

यदि कोई पवित्र भावना से जैन साधु के दिगम्बरत्व या नग्नता के कारणों पर गंभीरता से विचार करें मीमांसा करना चाहे तो निम्नांकित बिन्दु विचारणीय है –

जैन साधु का दिगम्बरत्व या नग्नता निर्दोषता, निर्भयता, निःशंकता, निर्पेक्षता, निश्चिन्तता, निर्लोभता एवं निर्विकारता की परिचायक है अर्थात् जैन साधु निर्दोष हैं, निर्भय हैं, निःशंक हैं, निर्पेक्ष हैं, निश्चिंत हैं, निर्लोभी हैं और निर्विकार हैं; अतः नग्न हैं तथा पूर्ण स्वाधीन हैं, संयमी हैं, सहिष्णु हैं; अतः नग्न हैं, निष्परिग्रही हैं।

वस्त्र विकार के प्रतीक हैं, लज्जा आदि काम विकार को ढकने व छुपाने के साधन है। भय, चिन्ता व आकुलता उत्पन्न कराने में प्रबल हेतु हैं। ममत्व-मोह बढ़ाने में निमित्त हैं; अतः मुनि नग्न ही रहते हैं।

दो-तीन वर्ष तक के बालकों में काम-विकार नहीं होता तो उसे नग्न रहने में लज्जा नहीं आती। अतः जैन साधु नग्न ही रहते हैं।

जो इन्द्रियों को जीतता है, वह जितेन्द्रिय है इस अर्थ में जैन साधु जितेन्द्रिय हैं। नग्नता जितेन्द्रिय होने का पक्का प्रमाण है।

जिसे अखण्ड आत्मा को प्राप्त करना है, उसे अखण्ड स्पर्श इन्द्रिय को जीत ही लेना चाहिए।

नग्नता स्पर्श इन्द्रिय पर विजय प्राप्त होने की पहचान है। जिस तरह शरीर में लगी एक छोटी सी फाँस भी असह्य वेदना का कारण बनती है, उसी तरह एक वस्त्र का भी परिग्रह असीम दुःख का कारण है और जब दिगम्बर मुनि को जितेन्द्रिय होने से वस्त्रादि की आवश्यकता का अनुभव नहीं होता तो वे वस्त्रादि परिग्रह रखकर अनावश्यक एक नई झंझट मोल क्यों ले? आकुलता को आमंत्रण क्यों दें? वस्त्रादि की संभाल करना, उनके रख-रखाव की चिन्ता करना, धुलाई की व्यवस्था करना, नवीन वस्त्रों की व्यवस्था करना – यह सब सहज नहीं होता है।

जब व्यक्ति को एक वस्त्र की झंझट छूट जाने से हजारों अन्य झंझटों से सहज ही मुक्ति मिल जाती हो तो वह बिना वजह वस्त्र का बोझा ढोए ही क्यों? एक लंगोटी को स्वीकार करते ही पूरा का पूरा परिग्रह माथे मढ़ जाता है। एक लंगोटी स्वीकार करते ही दूसरे दिन बदलने को दूसरी लंगोटी चाहिए या नहीं? उसे धोने को पानी-सोडा-साबुन, रख-रखाव के लिए पेटी, पानी के लिए बर्तन, बर्तन के लिए (कोठरी) ताला-चाबी, घर के लिए घरवाली। घरवाली के भरण-पोषण के लिए धंधा-व्यापार। कहाँ जाकर अन्त आयेगा इसका। फिर हममें तुममें और साधु में अन्तर ही क्या रहेगा? इसीलिए तो पूजन की पंक्ति में कहा है –

''फाँस तनक सी तन में साले, चाह लंगोटी की दुःख भालें''

सवस्त्र साधु पूर्ण अहिंसक निर्मोही और अपरिग्रही रह ही नहीं सकता। स्वाधीन व स्वावलम्बी भी नहीं रह सकता। वह लज्जा परिषह जयी भी नहीं है।

अन्नपान (भोजन) के पक्ष में भी कदाचित कोई यही तर्क दे सकता है, पर आहार लेना अशक्यानुष्ठान है। आहार के बिना तो जीवन ही संभव नहीं है, पर वस्त्र के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं है। वस्त्र के बिना जीवन संभव है, संभव तो है ही वस्त्रधारियों की अपेक्षा सुखद हैं, प्राकृतिक है अतः स्वास्थ के भी अनुकूल है।

दूसरे, भोजन यदि स्वाभिमान के साथ न मिले, निर्दोष न मिले एवं निरन्तराय न मिले तो छोड़ा भी जा सकता है,

छोड़ भी दिया जाता है, पर वस्त्र के साथ ऐसा होना संभव नहीं है। उसे तो हर हालत में धारण करना, यथा समय बदलना ही होगा। रख-रखाव की व्यवस्था भी करनी ही होगी। अतः वस्त्र धारण करने में दीनता-हीनता-पराधीनता और आकुलता की संभावना सर्वाधिक है।

दिगम्बरत्व मुनिराज या साधु का भेष या ड्रेस नहीं है, जिसे मनमाने ढंग से बदला जा सके। यह तो साधु का स्वाभाविक स्वस्थ रूप है। अपने मन को इस दिगम्बरत्व की स्वाभाविकता स्वीकृत होने में ही दिगम्बरत्व होता है।

इस संदर्भ में एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्कमिडीज की उस घटना का स्मरण किया जा सकता है जिसमें वह सारे नगर में नंगा नाचा था।

उसके बारे में कहा जाता है कि वह एक वैज्ञानिक सूत्र की खोज में बहुत दिनों से परेशान था। दिन-रात उसी की खोज में डूबा रहता था। एक दिन बाथरूम में नग्न होकर स्नान कर रहा था कि अचानक उसे उस बहु प्रतीक्षित अन्वेषणीय सूत्र का समाधान मिल गया, जिससे उसके हर्ष का ठिकाना न रहा। वह भाव विभोर हो गया। राजा को यह खुश की खबर सुनाने के लिए स्नानघर से वैसा नंगा ही बाहर निकलकर भरे बाजार के मार्ग से दौड़ता हुआ राजा के पास जा पहुँचा। उसे नग्न देख राजा को आश्चर्य भी हो रहा था और मन ही मन हंसी भी आ रही थी; परन्तु उस वैज्ञानिक को कुछ भी अस्वाभाविक नहीं लग रहा था। वह अपनी धुन का धनी अपनी ही गाये जा रहा था।

वस्तुतः ऐसी धुन के बिना, जिसमें व्यक्ति अन्य सब कुछ भूल सा जाता है, अपने लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है। चाहे वह भौतिक विज्ञान की खोज हो या आत्म विज्ञान की, सर्वज्ञस्वभावी आत्मा की खोज हो। अतः सर्वज्ञस्वभावी आत्मा के खोजी मुनिराज नग्न ही होते हैं।

दिगम्बरत्व को स्वाभाविकता, सहजता और निर्विकारिता के साथ उसकी अनिवार्यता से अपरिचित कतिपय महानुभावों को मुनिराज की नग्नता में असभ्यता व असामाजिकता जो दृष्टि गोचर होती है, वह उनके दृष्टिकोण का फेर है। ऐसे लोग समय-समय पर नग्नता जैसे सर्वोत्कृष्ट रूप से नाक भौं सिकोड़ते रहते हैं, घृणा का भाव भी व्यक्त करते रहते हैं। पर उन्हें नग्नता को मात्र निर्विकार दृष्टि से देखना चाहिए। अन्य दर्शनों में भी नग्नता को ही साधु का उत्कृष्टतम रूप माना गया है। परमहंस नामक परमत के साधु भी नग्न ही रहते हैं - ऐसा उनके ही पुराणों में उल्लेख है।

हाँ, निर्विकारी हुए बिना नग्नता निश्चित ही निन्दनीय है नग्नता के साथ निर्विकार होना अनिवार्य है। केवल तन से नग्न होने का नाम दिगम्बरत्व नहीं है। राग-द्वेष, काम-क्रोधादि विकारी भावों से मन (आत्मा) की नग्नता के साथ तन की नग्नता ही सच्चा दिगम्बरत्व है। ऐसी नग्नता को कभी भी लज्जाजनक, अशिष्ट एवं अश्लील नहीं कहा जा सकता। ऐसी नग्नता तो परम पूज्य है।

हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध पुराण पुरुष शुक्राचार्य के कथानक से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि तन की नग्नता के साथ मन का निर्विकारी होना आवश्यक है, अन्यथा जो नग्नता पूज्य है, वही निन्दनीय हो जाती है।

कहा जाता है कि शुक्राचार्य युवा थे, पर शिशुवत् निर्विकारी थे; अतः सहज भाव से नग्न रहते थे। एक दिन वे तलाव के किनारे से जा रहे थे, तलाव में कुछ कन्यायें निर्वस्त्र होकर स्नान कर रहीं थीं, वे उन्हें देख जरा भी नहीं लजाई। वे कन्यायें व शुक्राचार्य एक दूसरे की नग्नता से जरा भी प्रभावित नहीं हुए।

थोड़ी देर बाद शुक्राचार्य के वयोवृद्ध पिता वहाँ से निकले। उन्हें देखते ही सभी कन्यायें लज्जा गईं। न केवल लजाईं अपितु क्षुब्ध भी हो गईं। जल क्रीड़ा को जलांजलि देकर भागी और सबने अपने-अपने वस्त्र पहन लिए तथा लज्जा से उनकी आँखें जमीन में गड़ गई।

देखो! वे कन्यायें युवक को नग्न देखकर तो लजाई नहीं और एक वृद्ध व्यक्ति को देखकर लजा गईं। जरा सोचिए इसका क्या कारण हो सकता है? बस यही न कि तन से नंगा युवक मन से भी नंगा था, निर्विकारी था, और उसके पिता अभी मन से पूर्ण निर्विकारी नहीं हो सके थे। यह बात नारियों की निगाह से छिपी नहीं रही, रह भी नहीं सकती। कोई कितना भी छिपाये, पर मन का विकार तो सिर पर चढ़कर बोलता है।

''मुखाकृति कह देत है, मैले मन की बात''

नग्नता से नफरत करने का अर्थ है कि हमें अपना

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

विधान का आयोजन रत्नेशजी, चिरेनभाई, स्वानुभवजी, चैतन्यजी द्वारा कराया गया। इसी प्रसंग पर प्रतिदिन संजीवजी गोधा द्वारा दशलक्षण धर्म पर विशेष चर्चा की गई।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 13 सितम्बर को **श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, कोबा** में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा विशेष रूप से दो प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही दिनांक 14 व 15 सितम्बर को **सोनगढ स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह** में तीनों समय 'अष्टकर्म', 'जैन गणित', 'हमारे महापुरुष' विषय पर प्रवचन हुये, साथ ही विद्यार्थियों की शंकाओं का आगम सम्मत समाधान भी किया गया। अन्त में पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा संजीवजी गोधा का आभार व्यक्त किया गया।

कोलकाता : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पद्मपुकुर स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर में **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** द्वारा स्वरचित तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान के उपरान्त प्रात: समयसार (कर्ताकर्माधिकार) एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक (9वाँ अधिकार) पर प्रवचनों का लाभ मिला।

जयपुर-टोडरमल स्मारक भवन (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के उपरान्त **पण्डित गौरवजी शास्त्री** द्वारा दशलक्षण धर्म एवं सायंकाल **पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड** द्वारा समयसार (मोक्ष अधिकार) पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त दोपहर को **ब्र. कल्पनाबेन** द्वारा प्रौढ कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, छात्र प्रवचन एवं रात्रि में प्रवचनोपरान्त उपाध्याय कनिष्ठ-वरिष्ठ के छात्रों व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

सुगन्ध दशमी के दिन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर द्वारा '**ऐसे क्या पाप किये**' विषय पर आकर्षक व भव्य सजीव झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2000 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की।

विधि-विधान के कार्य पण्डित गौरवजी शास्त्री ने विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये।

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर क्षीरसागर स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर में **डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर** द्वारा प्रात: समयसार के आधार पर विभिन्न विषय, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। पाठशाला एवं रात्रि में प्रश्नमंच का आयोजन डॉ. मनीषा जैन द्वारा कराया गया।

– जम्बू जैन धवल (मंत्री-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, उज्जैन)

मुम्बई : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर दादर स्थित शिवाजी मंदिर ऑडिटोरियम में **पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर** द्वारा प्रात: समयसार (कर्ताकर्माधिकार) एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म व अन्य आध्यात्मिक विषयों पर अत्यंत सरल भाषा व अपनी विशेष रोचक शैली में व्याख्यानों का लाभ मिला। व्याख्यानों को सुनकर अनेक साधर्मियों की तत्त्वज्ञान के प्रति रुचि जागृत हुई। तत्त्वज्ञान को जानने एवं अध्यात्म को समझने की जिज्ञासा इतनी अधिक थी कि समय से पहले आकर ही 1500 साधर्मीजन अपनी सीट रोक लेते थे। अनेक साधर्मीजनों ने पहली बार अध्यात्म की बात सुनी और उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आया। व्याख्यानों से प्रभावित होकर नवीन पाठशालाएं भी प्रारम्भ हुईं।

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर किलागेट-आत्मायतन परिसर स्थित श्री वासुपूज्य पंचायती दिगम्बर जैन मन्दिर में **पण्डित शिखरचंदजी विदिशा** द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। धूपदशमी के दिन समयसार विद्यानिकेतन के छात्रों द्वारा भक्ति संगीत, पालना झूलन व झांकी का आयोजन किया गया। प्रात: सामूहिक दशलक्षण पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री व पण्डित प्रदीपजी शास्त्री रानीताल द्वारा संपन्न कराये गये। सभी कार्यक्रम पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर देवनगर स्थित सीमन्धर जिनालय में स्थानीय विद्वान **पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित राजीवजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री** द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: दशलक्षण मंडल विधान एवं रत्नत्रय विधान का आयोजन स्थानीय विद्वान पण्डित दीपकजी शास्त्री, पण्डित सुमितजी शास्त्री, पण्डित वैभवजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री तथा बाहर से पधारे पण्डित चेतनजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी द्वारा कराया गया। **– पुष्पेन्द्र जैन**

बड़नगर (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर में **पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर** द्वारा प्रात: इष्टोपदेश एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। यहाँ फरवरी माह में होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव संबंध भावभूमि को बताते हुए विशेष प्रेरणास्पद व्याख्यान भी हुये।

भावनगर (गुज.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर **पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन** द्वारा दशलक्षण विधान एवं गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् समयसार (निर्जरा अधिकार) एवं सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति, प्रतिक्रमण व दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

बैंगलोर (कर्नाटक) : यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में **पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर** द्वारा दशलक्षण मंडल विधान, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन हुए, तत्पश्चात् समयसार (जीवाजीवाधिकार) एवं रात्रि में जैनदर्शन के विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुए।

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर मुमुक्षु मण्डल में प्रात: दशलक्षण महामंडल विधान के उपरान्त **पण्डित पीयूषजी शास्त्री**

जयपुर द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, सायंकाल विभिन्न विषयों पर एवं दोपहर में स्वानुभव मंडल में समयसार (संवर अधिकार) पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त एक दिन एलोरा गुरुकुल में दोपहर को 'शिक्षा का प्रयोजन' विषय पर व्याख्यान हुआ। सायंकालीन प्रवचन के पूर्व स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रवचन होते थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी राउत एवं श्री कुशलजी जैन द्वारा संपन्न हुये।

कटनी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सुभाष हॉल में **पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा** द्वारा प्रात: समयसार (निर्जरा अधिकार), दोपहर में पुरुषार्थसिद्धिउपाय एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म व विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर **डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर** द्वारा प्रात: सीमंधर जिनालय कावांखेड़ा में दशलक्षण मंडल विधान के उपरान्त समयसार पर एवं सायंकाल श्री चतुर्मखी पार्श्वनाथ मंदिर आमलियों की बारी जिनालय में भक्तामर स्तोत्र की कक्षा व दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। **– सुकुमाल चौधरी**

सोनगढ (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगंबर जैन विद्यार्थी गृह में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण मंडल विधान, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, **पण्डित सोनूजी शास्त्री** द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुए एवं रात्रि में विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

गुना (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा समयसार (कलश 144) एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

पुणे-बानेड (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर **डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा** द्वारा दोपहर में संख्यामान-उपमामान विषय पर कक्षा, सायंकाल पंचपरावर्तन, कर्म-सिद्धांत व तीन लोक विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला। इस अवसर पर आयोजित सिद्धचक्र मण्डल विधान अनुभव जैन व नमन जैन मंगलार्थी द्वारा संपन्न कराया गया।

अहमदाबाद-मणिनगर (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर **पण्डित संजयजी सेठी जयपुर** द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत स्वानुभूति महिला मण्डल द्वारा सत्यघोष की कहानी पर आधारित 'सत्य की पराकाष्ठा' नाटक का मंचन, पाठशाला के बच्चों द्वारा 'पाप-कषाय-सम्यक्त्व' विषय पर नाटक का मंचन एवं 'जैनधर्म एवं आधुनिक विज्ञान' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यहाँ आयोजित पाठशाला में लगभग 150 बच्चे जैनधर्म का अध्ययन करते हैं।

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में **पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा** द्वारा समयसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। शाश्वतधाम की बालिकाओं द्वारा पूजन, कक्षा, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर **डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा** द्वारा प्रात: दशलक्षण मंडल विधान, दोपहर में समयसार (कलश टीका) एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा द्वारा दोनों समय प्रवचन, स्थानीय विद्वान पण्डित सुधीरजी शास्त्री द्वारा प्रात: दशलक्षण पूजन का अर्थ तथा पण्डित सचिनजी जैन द्वारा प्रात:काल व दोपहर को मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही प्रतिदिन गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, दोपहर में मंगलार्थियों द्वारा प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। निकट ही स्थित सासनी (छहढालाकार पण्डित दौलतरामजी की जन्मभूमि) में पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

नागपुर (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर इतवारी स्थित श्री भगवान महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में **पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन** द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में समयसार (गाथा 25-35) एवं रात्रि में युगलजी द्वारा रचित चैतन्य वाटिका में संग्रहीत कविताओं पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा प्रवचन एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। साथ ही श्री दिगम्बर जैन मोठे मन्दिर में पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

मुम्बई : यहाँ पर्व के अवसर पर मलाड में **डॉ. सचिन्द्रजी शास्त्री मंगलायतन** द्वारा प्रात: पूजन-विधान के उपरान्त प्रवचनसार (गाथा 80) एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

मुम्बई-बोरीवली : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: **पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल** द्वारा प्रात: समयसार (निर्जरा अधिकार) एवं सायंकाल गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन (समयसार कलश टीका) के पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक (सातवाँ अधिकार) पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: दशलक्षण मंडल विधान एवं रत्नत्रय विधान पण्डित समकितजी बांझल गुना एवं पण्डित रितेशजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा कराया गया; दोनों विद्वानों द्वारा सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं बालकक्षाएं भी आयोजित की गई। रात्रि में सदिच्छा युवा मण्डल द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

कोटा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर मुमुक्षु आश्रम में प्रात: जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् **पण्डित राहुलजी शास्त्री अशोकनगर** द्वारा प्रवचन, दोपहर में पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित नीतेशजी शास्त्री व पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा कक्षाएं, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित नीतेशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

शाश्वतधाम-उदयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री एवं ब्र. रवीन्द्रजी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त **पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री गुना** एवं **पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा** द्वारा तीनों

समय प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान, सायंकाल सामायिक, जिनेन्द्र भक्ति व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन डॉ. ममता जैन के निर्देशन में विद्यालय की बालिकाओं द्वारा कराया गया।

इसके अतिरिक्त सेक्टर-11 गायरियावास, सन्मति भवन, चित्रकूट नगर में स्थित मन्दिरों में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन बालिकाओं द्वारा किया गया।

शाश्वतधाम में अध्ययनरत बालिकाएं प्रथम बार बड़ौदा, रतलाम, दाहोद, बड़नगर, जावरा, घुवारा, लूणदा, डबोक गईं, जहाँ समागत विद्वानों के सान्निध्य में विधान, कक्षा, प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालित किये।

बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर खांदू कॉलोनी स्थित भगवान आदिनाथ महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरान्त **पण्डित अनंतजी विश्वंभर सेलू** द्वारा प्रवचनसार एवं रात्रि में बारह भावना विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में प्रवचन से पूर्व पण्डित संजयजी दौसा, पण्डित संदीपजी बांसवाड़ा एवं पण्डित विपुलजी ध्रुवधाम के प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ, जिसमें अंतिम दिन 'जीव की विराधना का फल' नामक नाटक प्रस्तुत किया गया।

हार्दिक बधाई!

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र तिजारा के निकट लाडपुर नामक गाँव में दिनांक 4 सितम्बर को आयोजित संस्कृत विभागीय राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वरिष्ठ उपाध्याय के छात्रों ने स्थान प्राप्त किये हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है -

(1) समर्थ जैन हरदा - अंग्रेजी वाद-विवाद (पक्ष) - प्रथम
(2) सोहम शाह कोल्हापुर - अंग्रेजी वाद-विवाद (विपक्ष)-प्रथम
(3) संदेश जैन - हिन्दी वाद-विवाद (पक्ष) - प्रथम
(4) यश रत्नु बेलगांव - 200 मी. दौड़ + 100 मी. रिले - प्रथम

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

मुक्त विद्यापीठ हेतु सूचना

जून में आयोजित प्रथम सेमेस्टर परीक्षाओं की कॉपियाँ जिन विद्यार्थियों ने अभी तक नहीं भेजी हैं, वे शीघ्रता से भेजें एवं फोन से सूचित अवश्य करें - **संपर्क सूत्र - 9785645793 (नीशू शास्त्री)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 से 20 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
25 से 29 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
1 से 3 नवम्बर	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
4 से 12 नवम्बर	कलकत्ता	अष्टाह्निका महापर्व

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 सितम्बर को **णमोकार मंत्र : एक पर्यवेक्षण** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित विक्रांतजी शाह सोलापुर एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से सहज जैन छिन्दवाड़ा व कपिल जैन बम्होरी तथा उपाध्याय वरिष्ठ से श्रेयांस जैन सिवनी रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण अशेष मोदी विदिशा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के दीपम जैन खतौली एवं सम्यक् जैन सिंघई खनियांधाना ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रंथ भेंट गौरवजी शास्त्री ने किया।

शोक समाचार

(1) इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री प्रकाशचंदजी लुहाड़िया का दिनांक 16 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने सन् 1985-86 में गोम्मटगिरि में 12वें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान की मूर्ति, वेदी एवं जिनालय की स्थापना की। आप अनेक पंचकल्याणकों में धर्मपत्नी श्रीमती शशिप्रभाजी के साथ सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी एवं माता-पिता बने। साधना नगर जिनालय में लगने वाले शिविर आदि तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से भी गहराई से जुड़े रहे।

ज्ञातव्य है कि आप मूलत: करांची (पाकिस्तान) निवासी थे; आप स्व. श्री बालचंदजी लुहाड़िया के सुपुत्र एवं स्व. श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया मुम्बई, स्व. श्री माणकचंदजी लुहाड़िया दिल्ली, स्व. मोतीचंदजी लुहाड़िया जोधपुर व श्री कैलाशचंदजी के भ्राता थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्री श्यामलालजी चौधरी का दिनांक 8 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप तीर्थोदय गोलाकोट एवं गूडर जैन मंदिर के अध्यक्ष (1971-2012) रहे। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित शीतलकुमारजी शास्त्री (नवोदय) के पिताजी एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक आकाशजी शास्त्री व अनिकेतजी शास्त्री (शास्त्री द्वितीय वर्ष) के दादाजी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पधारिये! अवश्य पधारिये!! ।। श्री वीतरागाय नमः ।। तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ लीजिए!!!

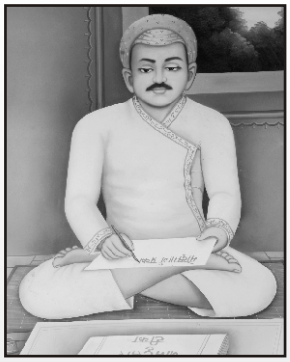

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय

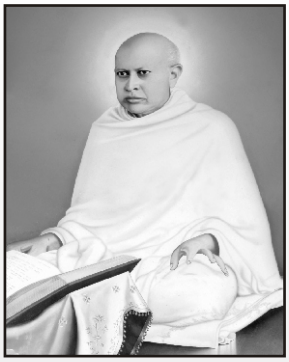

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर से रविवार 20 अक्टूबर, 2019 तक)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित उक्त शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा आदि विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन किया जायेगा। अतः अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक स्वर्ण अवसर होगा।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु
हार्दिक आमंत्रण है।

नोट : कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

: संपर्क :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(पृष्ठ 3 का शेष...)

निर्विकारी होना पसन्द नहीं है। पापी रहना व उसे वस्त्रों से छुपाये रहना ही पसंद है। शरीर में हरे-भरे घावों को खुला रखना भी मौत को आमंत्रण देना है; अतः यदि मन में विकार के घाव हैं तो तन को वस्त्र से ढकना ही होगा।

पर ध्यान रहे, तन की नग्नता के साथ मन की नग्नता (मन को निर्विकारी) होना ही चाहिए, अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा। नग्नता कलंकित ही होगी, अपमानित भी होगी? इसीलिए तो कहा है -

''सम्यग्ज्ञानी होय वहुरि दृढ़ चारित लीजे।''

बिना आत्मज्ञान के भी कभी-कभी व्यक्ति मुनिव्रत अंगीकार कर लेता है; पर उससे कोई लाभ नहीं होकर उल्टा सद्निमित्तों से दूर ही हो जाता है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव भावपाहुड़ में स्वयं लिखते हैं -

''णग्गो पावह दुःखं, णग्गे संसार सायरे भमइ।
णग्गो न लहहि बोहि, जिन भावणं वज्जिओ सुइदं।।

जिन भावना से रहित केवल तन नग्न व्यक्ति दुःख पाता है, वह संसार सागर में ही गोते खाता है, उसे बोध की प्राप्ति नहीं होती; अतः तन से नग्न होने के पहले मन से नग्न अर्थात् निर्विकारी होना आवश्यक है।

जिनागम के सिवाय अन्य जैनेतर शास्त्रों एवं पुराणों में भी दिगम्बर मुनियों के उल्लेख मिलते हैं।

रामायण के सर्ग १४ के २२वें श्लोक में राजा दशरथ जैन श्रमणों को आहार देते बताये गये हैं। भूषण टीका में श्रमण का अर्थ स्पष्ट रूपेण दिगम्बर मुनि ही किया है। श्रीमद्भागवत और विष्णुपुराण में ऋषभदेव का दिगम्बर मुनि के रूप में उल्लेख है। वायुपुराण, स्कन्ध पुराण में भी दिगम्बर मुनि का अस्तित्व दर्शाया गया है। ईसाई धर्म में भी दिगम्बरत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि आदम और हव्वा नग्न रहते हुए कभी नहीं लजाये और न वे विकास के चंगुल में फँसकर अपने सदाचार से हाथ धो बैठे। परन्तु जब उन्होंने पाप-पुण्य का वर्जित (निषिद्ध) फल खा लिया तो वे अपनी प्राकृतदशा खो बैठे और संसार के साधारण प्राणी हो गये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इतिहास एवं इतिहासातीत श्रमण एवं वैष्णव साहित्य के आलोक में यहाँ तक कहा गया है कि दिगम्बर मुनि हुए बिना मोक्ष की साधना एवं केवल्यप्राप्ति संभव ही नहीं हैं। ●

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय

दिनकर का जहाँ सवेरा है, आभा ने जिसको घेरा है।
मिथ्यात्व कहाँ घुस पायेगा, सम्यग्दर्शन का पहरा है।।

जिसकी स्वर्णिम गाथा को खुद, इतिहास स्वर्ण से लिखता है।
जिसका अतीत इस समय आज, भी वर्तमान सा दिखता है।।

जो व्यक्ति का साया बनकर, हर वक्त साथ में चलता है।
जिसके ओजस्वी वचनों से, हर अपर पक्ष फिसलता है।।

जिसकी भूमि पर कुन्दकुन्द के, समयसार ने वास किया।
जिसके वृक्षों की अमर छांव में, हमने गहरा श्वास लिया।।

जो बांहों में वात्सल्य लिये, सबको अपनाने निकला है।
वर्तमान की वर्धमान से, भेंट कराने निकला है।।

जिसने उत्तर से दक्षिण तक, जिनशासन को फहराया है।
जिसकी अनंत गहराई में, अम्बर भी झांक न पाया है।।

तत्त्वज्ञान से शून्य जिन्दगी, मानो एक निराशा है।
अवसर है संयोग सुलभ है, यही एक बस आशा है।।

जिसकी छत के नीचे रहती, साथ अनेकों भाषा है।
जहाँ विद्या का अध्ययन करना, हर बच्चे की अभिलाषा है।।
बस, यही इस महाविद्यालय की परिभाषा है।।

- संयम जैन, गुढाचन्द्रजी
(शास्त्री द्वितीय वर्ष)

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com